International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 378-380

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 378-380
www.allresearchjournal.com
Received: 08-04-2015
Accepted: 10-05-2015

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र
संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

वुल्टि मान्ना
पी–एचडी शोध छात्रा,
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

Correspondence:
वुल्टि मान्ना
पी–एचडी शोध छात्रा,
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

उत्तररामचरितम् में आदर्श दाम्पत्य प्रेम (नायक राम एवं नायिका सीता के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र, वुल्टि मान्ना

सारांशिका –
प्रेम हृदय की सूक्ष वृत्ति एवं सृष्टि की चिरन्तन आदि शक्ति है। मानव जीवन में प्रेम को सभी दृष्टियों से स्वीकार किया गया है। नाटकों में भी प्रायः सभी रचनाकारों ने प्रेम को ही माना है। नाटक की सवसे महान प्रेरक शक्ति प्रेम को कहा जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रेम एक सुपरिभाषित व्यवहार है जो स्त्री – पुरुष के बीच एक विशेष उद्दीपन की प्रतिक्रिया में उत्पन्न होता है। तथा पुरुष एवं स्त्री एक दूसरे के संपूरक होते है और उनका सर्वस्व एक दुसरे के लिए होता है। भवभूति ने इसी संदर्भ में 'मालतीमाधव' में दाम्पत्य प्रेम को इस प्रकार परिभाषित किया है –

प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा, सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितं वा।
स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसामित्य न्योन्य वत्सयोज्ञतिमस्तु।।[1]

अर्थात् दाम्पत्य प्रेम में पति – पत्नी एक दूसरे के प्रिय मित्र एवं बन्धु होते है। दोनों की भावनायें एक दूसरे के लिए होती है। दोनों ही एक दूसरे के पूरक एवं सहायक होते है। दोनों एक दूसरे के सुख – दुःख में सहभागी होते है। भवभूति ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'उत्तररामचरित' में नायक राम एवं नायिका सीता को एक आदर्श दम्पत्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसे आज भी एक आदर्श दाम्पत्य प्रेम का प्रतीक माना जाता है। अतः इस से ज्ञात होता है कि महाकवि भवभूति एक आदर्श दाम्पत्य प्रेम के समर्थक है।

कूटशब्द – दाम्पत्य प्रेम, आदर्श, पत्नीव्रत, पातीव्रत्य, निर्वासन।

प्रस्तावना –
प्रेम को परिभाषित करना जीवन में दुष्कर कार्य है। वस्तुतः संसार में जो कुछ भी सुन्दर एवं अच्छा है उसके मूल में प्रेम भावना विद्यमान होती है। इसीलिए माना गया है कि– प्रेम सुन्दर को सुन्दरतम् बनाता है। सौन्दर्य और प्रेम में आधाराधेय सम्बन्ध है। यदि सौन्दर्य एक सरोवर है तो प्रेम उसमें खिला हुआ कमल है। यदि सौन्दर्य बीज है तो प्रेम उस का अंकुर है। प्रेम कोई निश्चित और सर्वथा स्पष्ट चीज नहीं है। प्रेम की अवधारणा तो शाश्वत है और न ही सदा एक से रहने वाली। प्रेम के विविध अर्थ हो सकते है और बदलते भी रहते है।
भवभूति ने 'उत्तररामचरित' में दाम्पत्य प्रेम का वर्णन किया है, जिसमें राम – सीता को आदर्श दाम्पत्य प्रेम का प्रतीकरूप में प्रदर्शित किया है। प्रेम शरीर के सौन्दर्य पर नहीं निर्भर करता है एवं अन्य वाह्य सांसारिक कारणों को नहीं देखता है, जिसका वर्णन महाकवि 'उत्तररामचरित' में इस प्रकार किया है –

व्यतिषजति पदार्थानान्तरः कोऽपि हेतु–
र्न खलु बहीरूपाधीन्प्रीतयः संश्रयन्ते।
विकसति हि पतङगस्योदये पुण्डरीकं,
द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः।।[2]

अर्थात् प्रेम के लिए कोई वाह्य कारण अपेक्षित नहीं होता है इसका सम्बन्ध तो केवल हृदय से होता है। सूर्य के उदय होने पर कमल स्वतः खिल उठता है और चन्द्रमा के उदित होने पर चन्द्रकान्त मणि भी स्वतः द्रवित होने लगती है। इसका कोई कारण नहीं है। इसी प्रकार महाकवि की दृष्टि में नायक एवं नायिका एक दूसरे के प्रति समर्पित रहते है। जैसा कि 'उत्तररामचरित' में कहा गया है–

न किंचिदपि कुर्वाणः सौखैर्दुः खान्यपोहति।
तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियोजनः।।[3]

अर्थात् जो व्यक्ति जिसका प्रिय है बह कुछ ना करता हुआ भी एक साथ रहने के आनन्द से दुःखों को निश्चय ही नष्ट कर देता है, क्योंकि प्रियजन उसके लिए अपूर्व धन होता है, उसके पास रहे तो वह सदा सुखी रहता है।
अतः निःसन्देह कहा जा सकता है कि – पवित्र प्रेम, प्रेम वासना के स्तर से बहुत ही ऊँचा है।

राम का सीता के प्रति प्रेम –

'उत्तररामचरित' में रामायण का उत्तरार्ध प्रदर्शित है, जिसमें राम के वन प्रत्यागमन पश्चाद् राजगद्दी पाने से लेकर सीता के वनगमन एवं सीता मिलन तक की कथा है। राम इस नाटक के धीरोदात्त नायक है। भवभूति ने 'उत्तररामचरित' में राम को आदर्श पति को रूप में चित्रित किया है, जिसका प्रमाण इस नाटक में दिखाई पड़ता है।
राम का सीता के प्रति कितना अगाध प्रेम था, इसकी झलक 'उत्तररामचरित' में मिलती है। एकपत्नीव्रत का साक्षात् मूर्ति है राम। सीता के निर्वासित होनेपर अश्वमेध यज्ञ में वे उनकी स्वर्णमूर्ति को सहधर्मचारिणी के रूप में नियुक्त करते है। एक पत्नीव्रत का इससे अधिक उत्कृष्ट उदाहरण संसार में मिलना कठिन है।
'उत्तररामचरित' के प्रथम अंक में जब सीता चित्र देखते देखते थक जाती है तब राम सीता के बाहु को अपने कन्धे में रखते हुये कहते है–

विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा,
प्रमोहो निद्रा वा किमु विषविसर्पः किमु मदः।
तव स्पर्शे स्पर्शे मम हि परिमूढेन्द्रियगये,
विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च सम्मीलयति च।।[4]

अर्थात् राम सीता से कहते है कि तुम्हारे स्पर्शमात्र करने से विकार मेरे चैतन्य को विक्षुब्ध एवं उल्लसित करता है। यह सुख है वा दुःख, प्रमोह वा निद्रा है, विष का प्रसार है वा मद है यह निश्चित नहीं किया जा सकता है। यँहा राम की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है।
चित्रदर्शन के बाद जव गर्भवती सीता थक जाती है तब राम के वक्षःस्थल पर सिर रखके शो जाती है। इस प्रकार सीता के विश्वास, प्रेम को देखकर राम दाम्पत्य जीवन में पत्नी के महत्त्व को वताते हुये कहते है–

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयो–
रसावस्याः स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरसः।
अयं बाहुः कण्ठो शिशिरमसृणो मोक्तिकसरः
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः।।[5]

जव सीता थक कर शो जाती है तव राम कहते है कि यह घर की लक्ष्मी, अमृतशाली आँख का काजल, इसके स्पर्श में चन्दन की शीतलता इनकी हर वस्तु प्रिय है, किन्तु इनका विरह असहनीय है।
राम सीता के सुखद स्वरूप पर प्रकाश डालते हुये कहते है–

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकासनानि,
सन्तर्पणानि सकलेन्द्रियमोहनानि।
एतानि ते सुवचनानि सरोरूहाक्षि,
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि।।[6]

राम कहते है कि सीता की वाणी मेरे मुर्झाये हुये जीव को विकसित एवं सन्तुष्ट करती है। जिस वाणी के द्वारा कानों को अमृत तुल्य और मन को रसायन समान लगती है।
इस प्रकार आदर्श प्रेम का प्रमाण इस नाटक में सर्वत्र दृष्टिगत होता है। जैसे– राम ने जनपवाद निवारण के लिए सीता का परित्याग करने के वाद विलाप करते हुये कहते है–

शैशवात् प्रभृति पोषितां प्रियां, सौहृदादपृथगाश्रयामिमाम्।
छद्मना परिददामि मृत्यवे, सौनिके गृहशकुन्तिकमिव।।[7]

राम कहते है कि मैं अपनी प्रिया सीता को बाल्यावस्था से पोषन किया हूं , जो प्रेम के कारण कभी भी मेरे से अलग नहीं रही, इस प्रिया को मैं छल से उसी प्रकार मृत्यु को दे रहा हूं, जैसे कोई अपने घर में पली हुई चिड़िया को कसाई को दे देता है।
नाटक के तृतीय अंक में तो सीता निर्वासन के कारण राम का शोक चरम सीमा तक पहुंच जाता है, सीता प्राप्ति की कोई आशा न देखकर उनका शरीर शिथिल होने लगता है–

हा हा देवि! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः,
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि।
सीदन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा,
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि।।[8]

राम सीता से कहते है कि– तुम्हारे वियोग के कारण मेरा हृदय फटा जा रहा है एवं देह का बन्धन विदीर्ण हो रहा है। मैं सारा संसार को शून्य समझ रहा हूँ एवं निरन्तर ज्वालाओं से मेरा शरीर अन्दर ही अन्दर जल रहा है। और तुम्हारे से अलग होने का कारण मेरी अन्तरात्मा घोर अन्धकार में डूव रही है, मैं मूर्च्छित हो जाता हूँ। मैं ऐसा मन्दभाग्य हूं कि मेरी समझ में कुछ नहीं आता है।
अतः हम देखते है कि सीता राम की अतिप्रिय थी। एसी प्राणप्रिय सीता को प्रजारंजन के नाम पर घोर वन में निर्वासित कर अपने जीवन के समस्त सुखों को त्याग करने का काम केवल राम ही कर सकते है, और कोई नहीं कर सकता।

सीता का राम के प्रति प्रेम –

सीता इस नाटक की नायिका है, वे भारतकी एक आदर्श महिला है। राम के द्वारा निर्वासित होने पर उनका जीवन दुर्विषह हो गया है। महाकवि भवभूति ने 'उत्तररामचरित' में सीता के निर्वासन की जो घटना प्रस्तुत किये है, यह हृदय–विदारक है, पत्थर को भी टुकड़े–टुकड़े कर देते है। निर्वासित होने पर भी सीता के हृदय में राम के प्रति श्रद्धा और सम्मान की जो सरिता प्रवाहित होती है उसका दर्शन प्रथम अंक में ही प्राप्त हो जाता है–

भवतु। अस्मै कोपयिष्यामि, यदि तं प्रेक्षमाणा आत्मनः प्रभविष्यामि।[9]

अर्थात् सीता कहती है कि मैं राम पर कोप नहीं करूंगी, क्योंकि उनको देखकर ही सीता अपने आपको भी भूल जाती है। राम के प्रति कितना अगाध प्रेम था–इस वचन से मिलती है।
इस प्रकार तृतीय अंक में सीता की सखी वासन्ती ने सीता निर्वासन के लिए जब राम को दोष देती है तब अदृश्य वनी हुई सीता अपने प्राण–नाथ राम की इस निन्दा को सहन नहीं कर पाती और वासन्ती से कहती है कि –

सखि वासन्ति! त्वमेव दारुणा कठोरा चा यैवं प्रलपन्तं प्रलापयसि।[10]

वासन्ती तुम्हीं निष्ठुर और कठोर हो, जो विलाप करते हुए राम को रुला रही हो।
इसी अंक में सीता का राम के प्रति प्रगाढ़ अनुराग तब दिखाई पड़ता है जब सीता तमसा से कहती है कि–

हा दैव! एष मया विना अहमप्येतेन विनेति केन सम्भावितमासीत्? तन्मुहूर्तमात्रं जन्मान्तरादपि दुर्लभलब्धदर्शनं

बाष्पसलिलान्तरेषु पश्यामि तावद्वत्सलमार्यपुत्रम्।[11]

है ईश्वर, यह मेरे विना और मैं इनके विना रह सकुंगी– ऐसी सम्भावना किसने की थी? अर्थात् किसी ने भी ऐसा नहीं सोचा था। पलभर दूसरे जन्म में भी दुर्लभ दर्शन वाले आर्यपुत्र को आँसुओं के वीच देखती हूं।

राम के प्रति सीता का अगाध प्रेम भवभूति ने बाल्मीकि के इस श्लोक द्वारा किया है–

तथैव रामः सीतायाः प्राणेभ्योऽपि प्रियोऽभवत्।
हृदयं त्वेव जानाति प्रीतियोगं परस्परम्।।[12]

अर्थात् सीता राम की प्रिया थी और राम भी सीता को प्राणों से भी अधिक प्रिय थे क्योंकि पति–पत्नी के पारस्परिक प्रेम–सम्बन्ध को केवल उनका हृदय ही जानता है, अन्य कोई नहीं समझ पाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि सीता का जीवन पातिव्रत्यकी रक्षा के लिए अधिक कष्टमय रहा है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण भवभूति ने 'उत्तररामचरित' में आदर्श दाम्पत्य प्रेम के रूप में उपस्थित किया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भवभूति के दाम्पत्य प्रेम का आदर्श बहुत ही पवित्र तथा उच्च कोटिका है। उनका दाम्पत्य प्रेम वासनाशून्य है, विषयीलोककी वस्तु नहीं है। दाम्पत्य प्रेम का यह उज्ज्वल आदर्श पाठक के ध्यान को आकर्षित करने वाला है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण संसार में भी मिलना कठिन है। इनके प्रेम का महत्त्व आज भी उतना ही है, जितना कि प्राचीनकाल में था।

सन्दर्भ

1. मालतीमाधव – 6/18
2. उत्तररामचरित–6/12
3. उत्तररामचरित–6/5
4. उत्तररामचरित–1/35
5. उत्तररामचरित–1/38
6. उत्तररामचरित–1/36
7. उत्तररामचरित–1/45
8. उत्तररामचरित–3/38
9. उत्तररामचरित–डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चैखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, पृः संः 116
10. उत्तररामचरित– डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चैखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, पृः संः 244
11. उत्तररामचरित– डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चैखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, पृः संः 234
12. उत्तररामचरित–6/32